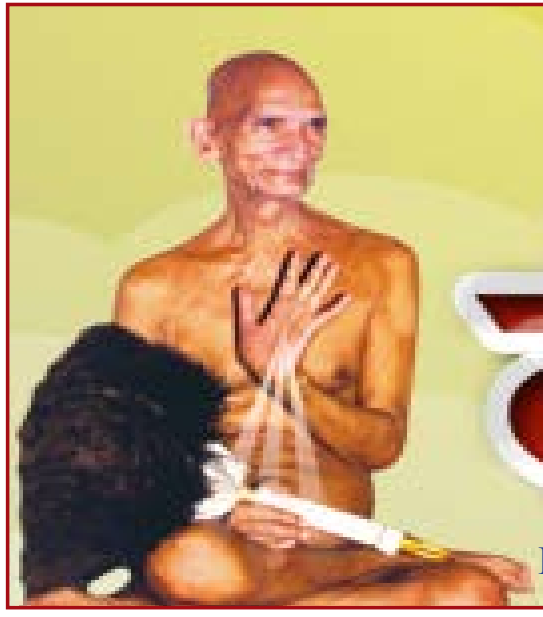

Issue: 140

26 August 2020

जैनाचार

www.jainachar.com Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

Hkkx 1s vfèkd [krjukd ykHk g} pfd Hkkx dh 1hek g}] ijr| ykHk dh ugh

vkpk;Jh vuHko1kxj th egkjkt

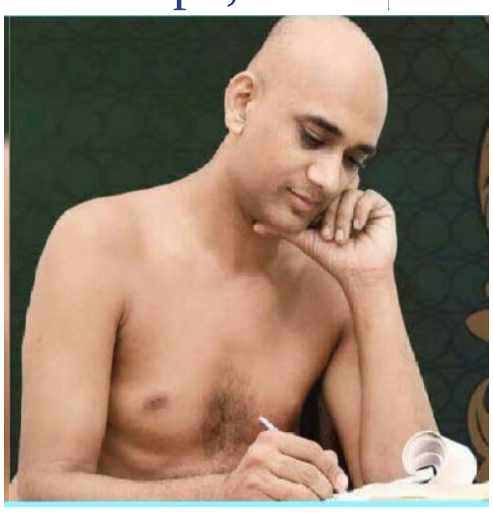

शुचेर्भावः इति शौचम् अर्थात् पवित्रता का भाव ही शौच है और अन्तरंग निर्मलता का लक्ष्य होने से इसे उत्तम शौच कहा गया है। प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री पूज्यपाद जी ने अपनी सर्वार्थ सिद्धि टीका में प्रकर्ष प्राप्त लोभान्निवृत्तिः शौचम् सूत्र से प्रकृष्ट प्राप्त यानि आसकित को प्राप्त लोभ की निवृत्ति को शौच धर्म कहा है। यद्यपि दोनों परिभाषायें व्यावहारिक रूप से पृथक सी प्रतीत होती हैं परंतु जब भाव पर दृस्टि जाती है, तो एक अनुपम रहस्य उद्घाटित होता है। लोभ यानि परिग्रह वाञ्छा, संग्रह इच्छा के निग्रह के बिना परिणामों में पवित्रता आ ही नहीं सकती। पदार्थों के प्रति मूर्च्छा यानि आसक्ति ही प्राणियों के दुख और संसार वृद्धि का कारण है। कमल पुष्प का रस चूसने की अभिलाषा में कमल के पराग पर बैठा भंवरा इतना आसक्त और लिप्त हो जाता है कि कब सूर्यास्त के साथ कमल पांखुडियाँ बंद हो जाती हैं, पता ही नहीं चलता। परंतु फिर भी वह आशा में कि रात्री जरूर गुजरेगी, सूर्य का उदय होगा और यह कमलिनी भी फिर खिलेगी, तब में पुन: स्वच्छन्द आकाश में विचरण करूँगा परंतु होनी तो होकर रहती हैं।

रात्रि में ही भूखा प्यारा हाथी आकर उसी कमलिनी को अपना ग्रास बना लेता है और रसासक्त वह भंवरा उसी कमलिनी के साथ इहलीला समाप्त कर बैठता है। आचार्य कहते है विचार करें कि जो भंवरा अपनी भ्रामरी ध्वनि शक्ति के प्रभाव से लकडी का बक्सा छेदने का भी सामर्थ्य रखता है, वह मुलायम, नाजुक कमल पांसुडी की नहीं छेद पाता आखिर क्यों? क्योंकि भोग से भी ज्यादा खतरनाक है लोभ? भोग की तो एक सीमा है, कोई कितना खायेगा, कितना कामसेवन करेगा एक सीमा के बाद वह थक ही जायेगा परंतु लोभ की तो कोई सीमा नहीं। इंग्लिश के शब्द END और AND का उच्चारण तो समान है परन्तु अर्थ विपरीत है। संसारियों के शब्दकोश में शायद AND यानि और ही लिखा हुआ है जबकि कहां END यानि समाप्त करना है, इसके ज्ञान से अनभिज्ञ वह मृगतृष्णा में भटक रहा है संसार, शरीर और भोगों की नश्वरता का चिन्तन और अहसास हमारे पदार्थों के प्रति आसक्ति भाव को घटाने का साधन बन सकता है। लोभ को सभी पापों का बाप कहा गया है वह कदापि हमारे चित्त को निर्मल नहीं होने देता। तभी तो चिन्तकों ने कहा है –

उत्तम शौच लोभ परिहारी संतोषी गुण रतन भण्डारी...

mUke 'kkp ifo=rk dk çrhd

परम पूज्य आचार्य भगवन 108 श्री सुनीलसागर जी गुरुदेव

शौच धर्म पवित्रता का प्रतीक है। यह पवित्रता संतोष के माध्यम से आती है। लोभ से इच्छा और इच्छा से तृष्णा बढ़ती है जिसकी पूर्ति कर पाना कभी संभव नहीं है। शुचिता का यह पावन धर्म इसी लोभ तृष्णा पर कुठाराघात करता है, जिसमें सफाई शुद्धता का ध्यान रखा जाता है।

यह सफाई शुद्धता सिर्फ बाहर की ही नहीं अंदर की भी करनी पड़ती है। तन को शुद्ध करना अलग बात है किंतु संतोष के जल से मन और जीवन को शुद्ध करना आज के शौच धर्म का सार है। लोभ कई तरह के होते हैं कितनी भी नदियां पहुंच जाएं फिर भी समुद्र प्यासा रहता है। कितना भी भोजन किया जाए फिर भी पेट खाली रहता है, अनगिनत शबों को भस्म करने के बाद भी श्मशान भूखा है। इसी तरह तृष्णा की खाई भी रिक्त ही रहती है।

लोभ की पूर्ति संसार में कभी हो ही नहीं सकती। इसलिए ज्ञानी पुरुष संतोष भावना के निर्मल जल से मन में उपजे लालच के मैल को दूर करते हैं। लोग गंगा–सागर स्नान करते हैं, पुष्कर आदि तीर्थों से अवगाहन करते हैं परंतु इतने मात्र से विशुद्ध नहीं हो जाते।

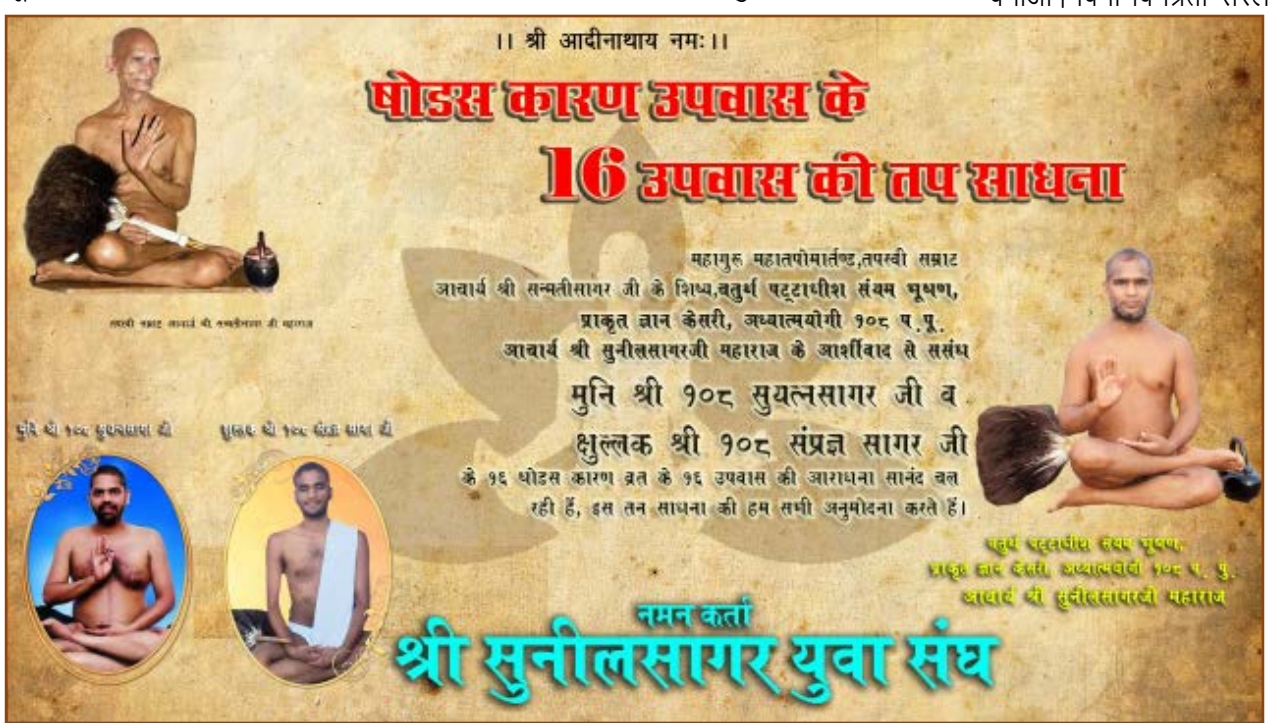

जो व्यक्ति समता भाव और संतोषरूपी जल से तृष्णा और लोभरूपी मल को धोता है, वही निर्मल शौच का धारक है, यह उत्तम शौच धर्म सुख के मार्ग का सहायक है। मोक्षपद का दायक है। इस धर्म की प्राप्ति मन की शुद्धि से होती है। इस हेतु हमें निरंतर यह भावना करनी चाहिए।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवें या जावें, अनेक वर्षों तक जीऊं या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे, तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे।

किसी चिज की इच्छा होना इस बात का प्रतीक की हमारे पास वह चिज नहीं है तो बेहतर है की हम अपने पास जो है उसके लिए परमात्मा का शुक्रिया अदा करे और संतोषी बनकर उसी में काम चलाये। भौतिक संसाधनों और धन दौलत में खूशी खोजना यह महज आत्मा का एक भ्रम है। उत्तम शौच धर्म हमे यही सिखाता है कि शुद्ध मन से जितना मिला है उसी में खूश रहो। परमात्मा का हमेशा शुक्रिया मानों और अपनी आत्मा को शुद्ध बनाकर ही परम आनंद मोक्ष को प्राप्त करना मुमकिन है।

1jyrk] 1jlrk ;k 1hèkkiu gh vktlo èke| g}

सर्पिणि वृक चाल की जगह सीधी सरल चाल में चलना ही आर्जव धर्म है। आईए इसकी शिक्षा दीक्षा ले। टेढ़ापन, तेरापन नही, सीधापन अपनापन है। ऋजुभावी आर्जव सरलता सरसता या सीधापन आर्जव धर्म है। पर्युषण का यह दिवस हमें सीधा रास्ता दिखाता है। आत्मा का मूल स्वभाव सीधा चलने वाला है, किंतु इस आत्मा को धारण करने वाला मनुष्य सर्प के समान चलता है, जिसकी हर चाल छल से भरी होती है। कुछ लोग ऊपर से दयालु, धार्मिक एवं करुणामयी दिखायी देते है किंतु भीतर से सर्प की विष ग्रंथी धारण किए होते है। धर्म में उच्च नीच, राग द्वेष, तेरा मेरा पक्ष विपक्ष का कोई स्थान नही है। आर्जव धर्म इस बात को आपकी जीवनशैली में सम्मलित करने को कहता है, जिसके जीवन में सीधापन, सरलता, एवम ऋजुता होती है। वह मोक्ष रूपी अनन्त सुख की और अग्रसर होता है परंतु जीवन शैली में सरलता लाना इतना आसान नहीं है। इसके लिए सर्वप्रथम अंदर की विषग्रंथी रूप छल कपटता को दूर करना होगा।

संकलन अभिषेक जैन लुहाडीया रामगंजमंडी

èke| 1c1| igy| >|du| dk ikB f1[kkrk g|

Økfrdkjh 1Ur vkpk;| Jh iqyd 1kxj th egkjkt

क्रांतिकारी सन्त आचार्य श्री पुलक सागर जी महाराज ने कहा मैं कुछ हु तो यह अहंकार है अहंकार का जन्मदाता अज्ञान है। ज्ञान आते ही अज्ञान नष्ट हो जाता है। उत्तम मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते कहा अगर तुम्हें कुछ मिला है तो अहंकार मे मत अकड़ो। जीवन को सरल सहज और मधुर बनाओ। बिना विनम्रता सरलता के बिना मानव जीवन की सार्थकता नही अहंकार की सबसे बड़ी समस्या समर्पण है। उन्होंने कहा इसका समाधान दौलत को नहीं दिलो को जीतना सीखो चार प्रकार की कषाय आदमी के जीवन पर लगी है। उन्होंने कहा जो आदमी ज्यादा जोड़ तोडकर जीता है अन्त समय कोमा मे जाता है आचार्य जी ने कहा ब्रेन हेमरेज से बचना है तो क्रोध से मुक्ति पानी होगी। दिल की बीमारी से बचना है तो मान से मुक्ति पानी होगी। जो इन सूत्रों को दिल में उतार लेता है वह देही रूप से स्वस्थ नहीं होता चैतन्य से स्वस्थ्य होकर परम धाम निर्वाण पर जाया करता है। उन्होनें कहा तुम अपने जीवन को अहंकार से कठोर मत बनाओ नहीं तो मौत तुम्हारा स्वागत करने खड़ी हो जाएगी। अहंकार अंधा होता है उसके पास पैर तो होते है पर आंखे नही होती।

आचार्य ने कहा महामारी में मंदिर बन्द है आप की पूजा अर्चना मे बाधा आ रही है तो आप अकड़ो मत झुकना सीखो। विनम्र बनो अपने घर से पूजा पाठ करो तो तुम्हारे पर्युषण पर्व साकार हो जाएगे।

संकलन अभिषेक जैन लुहाडीया रामगंजमंडी